CBSE Class 12 हिंदी कोर

Sample Paper 09 (2019-20)

Maximum Marks: 80

Time Allowed: 3 hours

General Instructions:

- इस प्रश्न पत्र में तीन खंड हैं - क, ख, ग।
- तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
- एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।
- दो अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए।
- तीन अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।
- चार अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 80-100 शब्दों में लिखिए।
- पाँच अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 120-150 शब्दों में लिखिए।

Section A

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (12)**

   संवाद में दोनो पक्ष बोलें यह आवश्यक नहीं। प्रायः एक व्यक्ति की संवाद मे मौन भागीदारी अधिक लाभकर होती है। यह स्थिति संवादहीनता से भिन्न है। मन से हारे दुःखी व्यक्ति के लिए दूसरा पक्ष अच्छे वक्ता के रूप में नहीं अच्छे श्रोता के रूप में अधिक लाभकर होता है।

   बोलने वाले के हावभाव और उसका सलीका उसकी प्रकृति और सांस्कृतिक-सामाजिक पृष्ठभूमि को पल भर में बता देते है। संवाद से संबंध बेहतर भी होते हैं और अशिष्ट संवाद सबंध बिगाड़ने का कारण भी बनता है। बात करने से बड़े-बड़े मसले, अंतर्राष्ट्रीय समस्याएँ तक हल हो जाती हैं। पर संवाद की सबसे बड़ी शर्त है कि एक-दूसरे की बातें पूरे मनोयोग से, संपूर्ण धैर्य से सुनी जाएँ। श्रोता उन्हें कान से सुने और मन से अनुभव करें तभी उनका लाभ है, तभी समस्याएँ सुलझने की संभावना बढ़ती है और कम-से-कम यह समझ में आता है कि अगले के मन की परतो के भीतर है क्या?

   सच तो यह है कि सुनना एक कौशल है, जिसमें हम प्रायः अकुशल होते है। दूसरे की बात काटने के लिए, उसे समाधान सुझाने के लिए हम उतावले होते हैं और यह उतावलापन संवाद की आत्मा तक हमें पहुँचने नहीं देता। हम तो बस अपना झंडा गाड़ना चाहते हैं, तब दूसरे पक्ष को झुंझलाहट होती है। वह सोचता है व्यर्थ ही इसके सामने मुँह खोला। रहीम ने ठीक ही कहा था-"सुनी अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहें कोय।" ध्यान और धैर्य से सुनना पवित्र आध्यात्मिक कार्य है और संवाद की सफलता का मूल मंत्र है। लोग तो पेड़-पौधो से, नदी-पर्वतो से, पशु-पक्षियों तक से संवाद करते हैं। राम ने इन सबसे

पूछा- “क्या आपने सीता को देखा?" और उन्हें एक पक्षी ने ही पहली सूचना दी थी। इसलिए संवाद की अनंत संभावनाओं को समझा जाना चाहिए।

i. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए। (1)
ii. रहीम के कथन का आशय समझाइए। (1)
iii. 'संवादहीनता' से क्या तात्पर्य है? यह स्थिति मौन भागीदारी से कैसे भिन्न है? (2)
iv. भाव स्पष्ट कीजिए-"यह उतावलापन हमे संवाद की आत्मा तक नही पहुँचने देता।" (2)
v. दुःखी व्यक्ति से संवाद में दूसरा पक्ष कब अधिक लाभकर होता है? क्यों? (2)
vi. 'सुनना कौशल' की कुछ विशेषताएँ लिखिए। (2)
vii. हम संवाद की आत्मा तक प्रायः क्यों नही पहुँच पाते? (2)

2. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (1×4)**

नीड़ का निर्माण फिर-फिर
नेह का आह्वान फिर-फिर
वह उठी आँधी कि नभ में
छा गया सहसा अँधेरा
धूलि-धूसर बादलों ने
भूमि को इस भाँति घेरा,
रात-सा दिन हो गया फिर
रात आई और काली,
लग रहा था अब न होगा,
इस निशा का फिर सवेरा,
रात के उत्पात-भय से
भीत जन-जन, भीत कण-कण
किंतु प्राची से उषा की
मोहिनी मुसकान फिर-फिर
नीड़ का निर्माण फिर-फिर
नेह का आह्वान फिर-फिर

i. आँधी तथा बादल किसके प्रतीक हैं? इनके क्या परिणाम होते हैं।
ii. कवि निर्माण का आह्वान क्यों करता है?
iii. कवि किस बात से भयभीत है और क्यों?
iv. 'रात आई और काली'-पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

Section B

3. **प्राकृतिक आपदाएँ** विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

OR

परहित सरिस धर्म नहिं भाई विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

OR

आज की बचत कल का सुख विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

4. किसी पर्यटन स्थल के होटल के प्रबंधक को निर्धारित तिथियों पर होटल के दो कमरे आरक्षित करने का अनुरोध करते हुए पत्र लिखिए। पत्र में उन्हें कारण भी बताइए कि आपने वही होटल क्यों चुना।

OR

निकट के शहर से आपके गाँव तक की सड़क का रख-रखाव संतोषजनक नहीं है। मुख्य अभियंता, लोक-निर्माण विभाग को एक पत्र लिखकर तुरंत कार्यवाही का अनुरोध कीजिए। समस्या के निदान के लिए एक सुझाव भी दीजिए।

5. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 15-20 शब्दों में लिखिये:

   a. समाचार शब्द को परिभाषित कीजिए।

   b. फोन-इन का आशय समझाइए।

   c. समाचार के इंट्रो और बॉडी से आप क्या समझते हैं?

   d. वॉचडॉग पत्रकारिता का आशय बताइए।

   e. संपादक के दो दायित्वों का उल्लेख कीजिए।

6. जन-धन योजना विषय पर एक आलेख लिखिए।

OR

स्वच्छता अभियान पर एक फीचर लिखिए।

OR

समाचार लेखन के लिए छः ककार क्या हैं और ये क्यों आवश्यक हैं?

Section C

7. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (2×3=6)**

हो जाए न पथ मे रात कहीं
मंजिल भी तो है दूर नहीं-
यह सोच थका दिन का पंथी भी
जल्दी-जल्दी चलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे-
यह ध्यान पुरो मे चिड़ियो के
भरता कितनी चंचलता है!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता हैं!
मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को,
भरता उर में विह्वलता है!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!

i. दिन ढलते समय पक्षियों की द्रुत गति का कारण कवि क्या मानता हैं?
ii. कवि को घर लौटने की ख़ास जल्दी नहीं दिखाई पड़ती, क्यों?
iii. बच्चों की 'प्रत्याशा' क्या हो सकती है? उनकी व्याकुलता कैसे व्यक्त की गई है?

OR

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (2×3=6)

तव प्रताप उर राखि प्रभु जैहउँ नाथ तुरंत।
अस कहि आयसु पाई पद बंदि चलेउ हनुमंत।।
भरत बाहु बल सील गुन प्रभु पद प्रीति अपार।
मन महुँ जात सराहत पुनि पुनि पवनकुमार।।

i. काव्यांश के कवि एवं कविता का नाम बताइए।
ii. हनुमान ने भरत से क्या कहकर चलने की आज्ञा माँगी?
iii. काव्यांश के आधार पर भरत के व्यक्तित्व की विशेषताएँ बताइए।

8. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (2x2=4)**

खरगोश की आँखों जैसा लाल सबेरा

शरद आया पुलों को पार करते हुए
अपनी नई चमकीली साईकिल तेज़ चलाते हुए
घंटी बजाते हुए ज़ोर-ज़ोर से।

i. काव्यांश में आए बिंबों का उल्लेख कीजिए।
ii. प्रकृति में आए परिवर्तनों की अभिव्यक्ति कैसे हुई है?

OR

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (2×2=4)

छोटा मेरा खेत चौकोना
कागज का एक पन्ना,
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।

i. काव्यांश के भाव-सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।
ii. मनोभावों की तुलना किससे की गई है?

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 60-70 शब्दों में दीजिये:

a. **बात सीधी थी पर** कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

b. **उषा** कविता के आधार पर उस जादू को स्पष्ट कीजिए जो सूर्योदय के साथ टूट जाता है।

c. **फ़िराक की गज़ल** में प्रकृति को किस तरह चित्रित किया गया है?

10. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (2x3=6)**

फिर जीजी बोलीं, "देख तू तो अभी से पढ़-लिख गया है। मैंने तो गाँव के मदरसे का भी मुँह नहीं देखा। पर एक बात देखी है कि अगर तीस-चालीस मन गेहूँ उगाना है तो किसान पाँच-छह सेर अच्छा गेहूँ। अपने पास से लेकर ज़मीन में क्यारियाँ बना कर फेंक देता है। उसे बुवाई कहते हैं। यह जो सूखे हम अपने घर का पानी इन पर फेंकते हैं वह भी बुवाई है। यह पानी गली में बोएँगे तो सारे शहर, क़स्बा, गाँव पर पानीवाले फ़सल आ जाएगी। हम बीज बनाकर पानी देते हैं, फिर काले मेघा से पानी माँगते हैं। सब ऋषिमुनि कह गए हैं कि पहले खुद दो तब देवता तुम्हे चौगुना-अठगुना करके लौटाएँगे। भईया, यह तो हर आदमी का आचरण है, जिससे सबका आचरण बनता है। यथा राजा तथा प्रजा सिर्फ यही सच नहीं है। सच यह भी है कि यथा प्रजा तथा राजा। यही तो गांधी जी महाराज कहते हैं।

i. बुवाई के लिए किसान किस प्रकार से श्रम करते हैं?
ii. त्याग की महत्ता को किसने बताया था? समाज के लिए यह क्यों ज़रूरी है?
iii. "यथा प्रजा तथा राजा' से जीजी क्या कहना चाहती थीं?

OR

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (2×3=6)

शिरीष तरु सचमुच पक्के अवधूत की भाँति मेरे मन में ऐसी तरंगें जगा देता है जो ऊपर की ओर उठती रहती हैं। इस चिलकती धूप में इतना सरस वह कैसे बना रहता है? क्या ये बाह्य परिवर्तन-धूप, वर्षा, आँधी, लू अपने आप में सत्य नहीं हैं? हमारे देश के ऊपर से जो यह मार-काट, अग्निदाह, लूट-पाट, खून-खच्चर का बवंडर बह गया है, उसके भीतर भी क्या स्थिर रहा जा सकता है? शिरीष रह सका है। अपने देश का एक बूढ़ा रह सका था। क्यों मेरा मन पूछता है कि ऐसा क्यों संभव हुआ? क्योंकि शिरीष भी अवधूत है। शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर है। गाँधीजी भी वायुमंडल से रस खींचकर इतने कोमल और इतने कठोर हो सकते थे। मैं जब-जब शिरीष की ओर देखता हूँ तब-तब हूक उठती है-हाय, वह अवधूत आज कहाँ है?

i. शिरीष का वृक्ष लेखक पर क्या प्रभाव डालता है?
ii. लेखक शिरीष की किस विशेषता की चर्चा करता है?
iii. शिरीष स्थिर कैसे रह सका?

11. निम्नलिखित A, B, C प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिये, प्रश्न D अनिवार्य है : (4+4+2)

a. बाज़ार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या-क्या असर पड़ता है?

b. सफ़िया के भाई ने नमक की पुड़िया ले जाने से क्यों मना कर दिया?

c. भक्तिन का जीवन सदैव दुखों से भरा रहा, स्पष्ट कीजिए।

d. चार्ली चैप्लिन का व्यक्तित्व कैसा था?

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर 80-100 शब्दों में दीजिये:

a. यशोधर बाबू का अपने बच्चों के साथ कैसा व्यवहार था? **सिल्वर वैडिंग** के आधार पर बताइए।

b. यशोधर बाबू की पत्नी ने मॉडर्न बनने के पीछे क्या तर्क दिए थे?

c. किस घटना से पता चलता है कि लेखक की माँ उसके मन की पीड़ा समझ रही थी? **जूझ** कहानी के आधार पर बताइए।

d. टूटे-फूटे खंडहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती ज़िंदगियों के अनछुए समयों का भी दस्तावेज़ होते हैं - इस कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

e. **अतीत में दबे पाँव** पाठ का प्रतिपाद्य बताइए।

CBSE Class 12 हिंदी कोर
Sample Paper 09 (2019-20)

Solution

Section A

1. i. प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक है 'संवाद का महत्त्व'।
   ii. रहीम के कथन का आशय है कि अगर हम अपनी पीड़ा एवं कष्टों का वर्णन दूसरों के सामने करते हैं, तो वे हमारे दुःख बाँटने के स्थान पर हमारा मजाक उड़ाते हैं इसलिए दूसरों के सामने अपने दुःखों का वर्णन नहीं करना चाहिए।
   iii. संवादहीनता से तात्पर्य ऐसी स्थिति से है, जब एक ही व्यक्ति निरंतर बोल रहा हो और दूसरा व्यक्ति उसे सुन रहा हो। यह स्थिति मौन भागीदारी से भिन्न है क्योंकि दूसरा व्यक्ति कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करता है।
   iv. प्रस्तुत पंक्ति का भाव यह है कि जब एक व्यक्ति कुछ बोल रहा हो, तो दूसरा व्यक्ति समाधान सुझाने के लिए उतावला होता है। यही उतावलापन संवाद को उच्च कोटि का नहीं बनने देता।
   v. दुःखी व्यक्ति से संवाद में दूसरा पक्ष तभी लाभकारी होता है जब वह एक अच्छे वक्ता के रूप में नहीं, बल्कि अच्छे श्रोता के रूप में होता है क्योंकि दुःखी व्यक्ति अपने दुःखों का वर्णन करके अपना बोझ (दुःख) हल्का करना चाहता है।
   vi. सुनना कौशल की कुछ विशेषताएँ निम्न हैं-
      i. दूसरे की बातों को धैर्यपूर्वक तथा ध्यान से सुनना।
      ii. कान से सुनना तथा मन से अनुभव करना।
   vii. हम संवाद की आत्मा तक प्रायः इसलिए नहीं पहुँच पाते क्योंकि हम दूसरों की बात काटने के लिए व उसका समाधान सुझाने के लिए उतावले हो जाते हैं। हम किसी की बातों को धैर्यपूर्वक नहीं सुन सकते हैं इसीलिए हम न तो उसकी बातों को समझ पाते हैं, और न ही सही मायने में संवाद कर पाते हैं।
2. i. कविता के अनुसार आँधी तथा बादल क्रांति के प्रतीक हैं। इनके आने का परिणाम यह होता है कि इनके आने के बाद पुनः सवेरा होता है अर्थात् नए सिरे से जीवन का आरंभ होता है।
   ii. कवि निर्माण का आह्वान करता है क्योंकि क्रांति के कारण तबाही मच गई थी। और तबाही केवल नए निर्माण से हीं रुक सकती है।
   iii. कवि इस बात से भयभीत है कि इस घनघोर रात के बाद सवेरा आएगा कि नहीं क्योंकि पाप और अत्याचार अत्यधिक बढ़ गए है। इस कारण कवि का भयभीत होना स्वाभाविक है।
   iv. 'रात आई और काली' से आशय यह है कि अत्याचार और पाप बहुत अधिक बढ़ गए हैं। जिस कारण कवि को आशंका हो रही है कि इस रात के बाद सवेरा आएगा या नहीं।

Section B

3. **प्राकृतिक आपदाएँ**

प्राकृतिक आपदा को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि यह एक ऐसी प्राकृतिक घटना है जिससे अनेक लोग प्रभावित हों और उनका जीवन खतरे में हो। प्राकृतिक आपदा एक असामान्य प्राकृतिक घटना है, जो कुछ समय के लिए ही आती है, परंतु अपने विनाश के चिह्न लंबे समय के लिए छोड़ जाती है।

प्राकृतिक आपदाएँ अनेक तरह की होती हैं, जैसे-हरिकेन, सुनामी, सूखा, बाढ़, टायफून, बवंडर, चक्रवात आदि, मौसम से संबंधित प्राकृतिक आपदाएँ है। दूसरी ओर भूस्खलन एवं बर्फ की सरकती चट्टानें ऐसी प्राकृतिक आपदाएँ हैं, जिसमें स्थलाकृति परिवर्तित हो जाती है। भूकंप एवं ज्वालामुखी प्लेट विवर्तनिकी के कारण आने वाली प्राकृतिक आपदाएँ हैं। इन प्राकृतिक आपदाओं के पीछे उल्लेखनीय योगदान मानवीय गतिविधियों का भी होता है। मानव अपने विकास कार्यो के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन करता है। वैश्विक तापीकरण भी प्राकृतिक आपदा का ही एक रूप है। वस्तुतः जनसंख्या वृद्धि, औद्योगिक क्रियाकलाप तथा प्रकृति के साथ खिलवाड़ ऐसे मुख्य कारण हैं, जिनके कारण मानव समाज को प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ता है।

प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण उपाय यह है कि ऐसी तकनीकों को विकसित किया जाए, जिससे प्राकृतिक आपदाओं की सटीक भविष्यवाणी की जा सके, ताकि समय रहते जान-माल की सुरक्षा संभव हो सके। इसी उद्देश्य के तहत अंतरिक्ष विज्ञान से इस क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता मिली है। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक आपदा की स्थिति उपस्थित होने पर किस तरह उससे निपटना चाहिए, इसके लिए आपदा प्रबन्धन सीखना अति आवश्यक है। इस उद्देश्य हेतु एक व्यवस्थित पाठ्यक्रम होना चाहिए तथा प्रत्येक नागरिक के लिए इसका प्रशिक्षण अनिवार्य होना चाहिए।

OR

परहित सरिस धर्म नहिं भाई

परोपकार से बड़ा इस संसार में कुछ नहीं होता है। इस विषय में गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है कि-

"परहित सरिस धर्म नहिं भाई।

परपीड़ा सम नहिं अधमाई।।"

अर्थात् परहित (परोपकार) के समान दूसरा कोई धर्म नहीं है और दूसरों को पीड़ा (कष्ट) देने के समान कोई अन्य नीचता या नीच कर्म नहीं है। पुराणों में भी कहा गया है, 'परोपकारः पुण्याय पापाय परपीड़नम्' अर्थात् दूसरों का उपकार करना सबसे बड़ा पुण्य तथा दूसरों को कष्ट पहुँचाना सबसे बड़ा पाप हैं।

परोपकार की भावना से शून्य मनुष्य पशु तुल्य होता है, जो केवल अपने स्वार्थों की पूर्ति तक ही स्वयं को सीमित रखता है। मनुष्य जीवन बेहतर है क्योंकि मनुष्य के पास विवेक है। उसमें दूसरों की भावनाओं एवं आवश्यकताओं को समझने तथा उसकी पूर्ति करने की समझ है और इस पर भी अगर कोई केवल अपने स्वार्थ को ही देखता हो, तो वाकई वो मनुष्य कहलाने योग्य नहीं है।

इसी कारण मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। इस दुनिया में महात्मा बुद्ध, ईसा मसीह, दधीचि ऋषि, अब्राहम लिंकन, मदर टेरेसा, बाबा आम्टे जैसे अनगिनत महापुरुषों के जीवन का उद्देश्य परोपकार ही था। भारतीय संस्कृति में भी इस तथ्य को रेखांकित किया गया है कि मनुष्य को उस प्रकृति से प्रेरणा लेनी चाहिए, जिसके कण-कण में परोपकार की भावना व्याप्त है। भारतीय संस्कृति में इसी भावना के कारण पूरी पृथ्वी को एक कुटुंब माना गया है तथा विश्व को परोपकार संबंधी संदेश दिया गया है। इसमें सभी जीवों के सुख की कामना की गई है।

OR

आज की बचत कल का सुख

वर्तमान आय का वह हिस्सा, जो तत्काल व्यय (खर्च) नही किया गया और भविष्य के लिए सुरक्षित कर लिया गया 'बचत' कहलाता है। पैसा सब कुछ नहीं रहा, परंतु इसकी ज़रूरत हमेशा सबको रहती है। आज हर तरफ़ पैसों का बोलबाला है क्योंकि पैसों के बिना कुछ भी नहीं। आज ज़िंदगी और परिवार चलाने के लिए पैसे की ही अहम भूमिका होती है। आज के समय में पैसा कमाना बहुत मुश्किल है । उससे कहीं अधिक कठिन है, पैसे को अपने भविष्य के लिए सुरक्षित बचाकर रखना, क्योंकि अनाप-शनाप खर्च और बढ़ती महँगाई के अनुपात में कमाई के स्रोतों में कमी होती जा रही है इसलिए हमारी आज की बचत ही कल हमारे भविष्य को सुखी और समृद्ध बना सकने में अहम भूमिका निभाएगी। आज के दौर में बचत नहीं करना एक मूर्खतापूर्ण निर्णय साबित होता है।

जीवन में अनेक बार ऐसे अवसर आ जाते हैं, जैसे आकस्मिक दुर्घटनाएँ हो जाती हैं, रोग या अन्य शारीरिक पीड़ाएँ घेर लेती हैं, तब हमें पैसों की बहुत आवश्यकता होती है। यदि पहले से बचत न की गई तो विपत्ति के समय हमें दूसरों के आगे हाथ फैलाने पड़ सकते हैं। कभी-कभी तो पैसों के अभाव में बहुत बड़ा अनर्थ हो जाता है और हम कुछ कर भी नहीं पाते हैं। हमारी आज की छोटी-छोटी बचत या धन निवेश ही हमें भविष्य में आने वाले तमाम खर्चे का मुफ्त समाधान कर देती है। आज की थोड़ी-सी समझदारी आने वाले भविष्य को सुखद बना सकती है। बचत करना एक अच्छी आदत है, जो हमारे वर्तमान के साथ-साथ भविष्य के लिए भी लाभदायक सिद्ध होती है। किसी ज़रूरत या आकस्मिक समस्या के आ जाने पर बचाया गया पैसा ही हमारे काम आता है। संक्षेप में कह सकते हैं कि बचत करके हम अपने भविष्य को सँवार सकते हैं तथा आकस्मिक दुर्घटनाओं और भविष्य की मुसीबतों से बच सकते हैं।

4. सेवा में,

   प्रबंधक महोदय,

   स्पार्क हेवन होटल,

   नैनीताल, उत्तराखंड।

   17 अप्रैल, 2019

   विषय -होटल में कमरे आरक्षित करवाने हेतु।

   महोदय,

   मैं जय प्रकाश, दिल्ली का निवासी हूँ। मैंने आपके होटल की आवभगत के विषय में बहुत प्रशंसा सुनी है। मैं और मेरा परिवार दिनांक 25 अप्रैल, 2019 से 27 अप्रैल, 2019 तक नैनीताल में पर्यटन के उद्देश्य से आ रहे हैं इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप अप्रैल 20, 2019 से 27 अप्रैल 27 , 2019 तक की दिनांक के लिए मेरे नाम से दो कमरे आरक्षित कर दीजिए।

   धन्यवाद

   भवदीय

   जय प्रकाश

   दिल्ली

OR

सेवा में
मुख्य अभियंता,
लोक निर्माण विभाग,
दिल्ली।

15 अप्रैल, 2019

विषय - सड़कों के रख-रखाव हेतु।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं गोविन्द प्रसाद, बसई गाँव का निवासी हूँ। निकट के शहर से हमारे गाँव को जो सड़क जोड़ती है ,उसका अभी कुछ ही दिनों पूर्व लोक निर्माण विभाग की ओर से निर्माण करवाया गया था। सड़क का उचित रख-रखाव न करने के कारण सड़क पर दोनों ओर गंदगी फैली रहती है, लोग अपने घर का कूड़ा वहाँ डालने लगे हैं। इसके अतिरिक्त सड़क भी बीच-बीच में कई जगह से टूट गई है,और सड़क पर जगह-जगह गढ्ढे बन गए हैं, जिससे आने-जाने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

अतः महोदय मेरा आपसे अनुरोध है कि सड़क पर कूड़ा डालने वाले लोगों को चेतावनी देकर वहाँ पर कूड़ा न डालने का निर्देश दिया जाए और सड़क को पुनः निर्माण करके उसे उपयोग करने के लायक बनाया जाए।

आशा है कि आप मेरे इस पत्र द्वारा प्राप्त सूचना पर शीघ्रातिशीघ्र कदम उठाएँगे।

धन्यवाद

भवदीय

गोविन्दप्रसाद

बसई गाँव

5. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 15-20 शब्दों में लिखिये:

   a. समाचार का अंग्रेजी पर्याय (NEWS) चारो दिशाओं को सांकेतिक करता है। अपने आस-पास के समाज एवं देश-दुनिया की घटनाओं के विषय मे त्वरित एवं नवीन जानकारी, जो पक्षपात रहित एवं सत्य हो, समाचार कहलाता है।

   b. **फोन इन** कार्यक्रम रेडियो या टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले वे कार्यक्रम होते हैं, जिनमे किसी सामाजिक, सांस्कृतिक या जागरूकतापरक कार्यक्रम में दर्शकों को फोन करके जानकारी ग्रहण करने या अपने विचार प्रस्तुत करने का अधिकार होता है।

   c. समाचार के आमुख को 'मुखड़ा' या 'इंट्रो' कहा जाता है। यह समाचार का पहला अनुच्छेद होता है। आमुख या इंट्रो के अतिरिक्त समाचार के शेष भाग को बॉडी या क्लेवर कहा जाता है।

d. कहीं किसी प्रकार की गड़बड़ी को सार्वजनिक करना 'वॉचडॉग पत्रकारिता' कहलाता है। यह सरकारी सूत्र पर आधारित पत्रकारिता है।

e. **संपादक के दो दायित्व निम्नलिखित हैं-**

i. संवाददाताओं तथा रिपोर्टरों द्वारा प्राप्त लिखित सामग्री को शुद्ध कर प्रस्तुति के योग्य बनाना।
ii. समाचार-पत्र की नीति, आचार-संहिता तथा जनकल्याण का ध्यान रखना।

6. **जन-धन योजना**

जन-धन योजना का आशय है कि भारत के सभी नागरिकों के पास अपना बैंक खाता हो, जो खास कर गरीबों के लिए आवश्यक है। 15 अगस्त, 2014 को प्रधानमंत्री नरेद्र मोदी ने जन-धन योजना की घोषणा की, जिसके अंतर्गत प्रत्येक परिवार को अपना एक बैंक अकाउंट बनाना होगा, जिसमें उन्हें 1 लाख रूपये की बीमा राशि एवं एक डेबिट कार्ड की सुविधा प्राप्त होगी।

प्रधानमंत्री जन-धन योजना गरीबों को ध्यान में रखकर बनाई गई है, जिससे उनमे बचत की भावना का विकास हो, साथ ही उनमें भविष्य की सुरक्षा का अहम भाव जागे। इसके अतिरिक्त इस कदम से देश का पैसा भी सुरक्षित होगा और जनहित के कार्यों को बढ़ावा भी मिलेगा। यह योजना केद्र सरकार का बड़ा और अहम फैसला है, जोकि देश की नींव को मजबूत बनाएगा।

प्रधानमंत्री जन-धन योजना का नारा है 'सबका साथ सबका विकास' अर्थात् देश के विकास में ग्रामीण लोगों का योगदान अहम है, जिसे भूला नहीं जा सकता। अब तक जितनी भी योजनाओं को सुना जाता था वह केवल शहरों तक ही सीमित होती थीं, लेकिन देश का बड़ा भाग ग्रामीण तथा किसान परिवार हैं, जिन्हें जागरूक तथा सुरक्षित करना ही इस योजना का अहम उद्देश्य है।

इस योजना के अंतर्गत कई मूलभूत सुविधाएँ भी प्रदान की गई हैं। खाता धारकों को 30,000 रूपये का बीमा कवरेज दिया जाएगा। साथ ही किसी आपत्ति की स्थिति में बीमा राशि 1 लाख रूपये तक का कवरेज दिया जाएगा।

इस योजना में शून्य स्तर पर भी खाते खोले जा रहे हैं, जिन्हें जीरो बैलेंस की सुविधा कहा जाता है। जन-धन योजना वर्तमान सरकार द्वारा लिया गया अहम निर्णय है, जिसके तहत गरीबों को आर्थिक रूप से थोड़ा सशक्त बनाने की कोशिश की गई है, साथ ही बैंकिंग सिस्टम को देश के हर व्यक्ति तक पहुँचाने की कोशिश की गई है। इस योजना से गरीबों और मजदूरों को लाभ मिल रहा है।

OR

स्वच्छता अभियान

भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा महात्मा गाँधी की 145वीं जयंती के अवसर पर आरंभ किया गया 'स्वच्छ भारत अभियान' अब तक का सबसे बड़ा स्वच्छता अभियान है। गाँधीजी के 'क्विट इंडिया' आह्वान को पूरा करने वाला देश अब उनके 'क्लीन इंडिया' के आह्वान को पूरा करने निकल पड़ा है। वैसे ऐसा पहली बार नहीं है, जब स्वच्छता

अभियान की बात चली हो।गाँधीजी ने स्वतंत्रता आंदोलन के समय ही स्वच्छता अभियान की बात की थी, और उसे आगे भी बढ़ाया था। अब एक बार फिर से स्वच्छता अभियान को सार्थक बनाने के प्रयास जारी हैं।

अब वह समय आ गया है जब हम विश्व पटल पर देश की छवि एक स्वच्छ भारत की बनाएँ। जिस तरह साँपों एवं जादू के देश की छवि से हम काफी आगे बढ़ चुके हैं, उसी तरह अस्वच्छता हमारे लिए अतीत बन जाए। आज देश का प्रत्येक नागरिक भारत को स्वच्छ देखना चाहता है, लेकिन इसके लिए वैयक्तिक तौर पर सहयोग देने से अभी भी कई लोग हिचकिचा रहे हैं।

देश को स्वच्छ बनाना सिर्फ किसी सरकार या संगठन की जिम्मेदारी नहीं हो सकती, होनी संभव भी नहीं है। जब तक देश के नागरिक इसके प्रति जागरूक नहीं होंगे, तब तक इस महान लक्ष्य को प्राप्त करना संभव नहीं है। स्वच्छता की भावना हमारे अंदर होनी चाहिए। किसी भय या बल के प्रभाव में नहीं, बल्कि हमें स्वयं ही इसके प्रति आंतरिक स्तर पर सचेत होना होगा। न तो कोई गंदगी फैलाए और न ही किसी को गंदगी फैलाने दे। यही भावना स्वच्छता अभियान को सफल एवं सार्थक बना सकती है।

हमें स्वच्छता के महत्त्व को समझना होगा। इसके अभाव में यानी गंदगी से होने वाले दुष्प्रभावों को जानना होगा। विश्व पटल पर बनी अपनी गंदगी की छवि को मिटाकर अपनी स्वच्छता-प्रिय छवि को स्थापित करना होगा।

OR

समाचार लेखन के लिए छ: सूचनाओं का प्रयोग किया जाता है। ये छ: सूचनाएँ-क्या हुआ, कब हुआ, किसके (कौन) साथ हुआ, कहाँ हुआ, क्यों और कैसे हुआ प्रश्नों के उत्तर में प्राप्त होती हैं। यही छ: ककार कहलाती हैं। इनमें से प्रथम चार ककार (क्या, कब, कौन, कहाँ) सूचनात्मक व अन्तिम दो ककारे (क्यों, कैसे) विवरणात्मक होते हैं। समाचार को प्रभावी एवं पूर्ण बनाने के लिए ही इन छ: ककारों का प्रयोग किया जाता है। प्रथम चार ककार समाचार का इण्ट्रो (मुखड़ा) व अन्तिम दो ककार बॉडी व समापन को निर्माण करते हैं।

Section C

7. i. कवि कहता है कि दिन को ढलता हुआ देखकर पक्षी व्याकुल हो जाते हैं, उनके बच्चे दाना पाने के लिए उनकी शीघ्रता से लौट आने की आस लिए घोंसलों से झाँक रहे होगे। इसलिए बच्चों से मिलने की व्याकुलता के कारण पक्षी दिन ढलते समय द्रुत गति से अपने घोंसलों की ओर उड़ने लगते है।
   ii. कवि को घर लौटने की खास जल्दी नहीं दिखाई पड़ती क्योकि दिन जल्दी-जल्दी ढल रहा है, लेकिन उससे मिलने के लिए न कोई व्याकुल है और न ही उत्कठित है इसलिए उसे घर लौटने की खास जल्दी नहीं है ।
   iii. बच्चों की प्रत्याशा माता-पिता से मिलने की तीव्र इच्छा है। वे भूखे बच्चे घोंसलो से बाहर इस आशा में झाँकते है कि उनके माता-पिता उनके लिए कुछ दाना-पानी ला रहे होगे। उनकी यही उम्मीद उन माता-पिता के पंखों में फुर्ती भर देती है।

OR

i. काव्यांश के कवि तुलसीदास एवं कविता का नाम 'लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप' है।
ii. हनुमान ने भरत से कहा कि हे स्वामी मैं आपकी महिमा और बल को हृदय में धारण कर शीघ्र ही पहुँच जाऊँगा। यह

कहकर हनुमान ने भरत से चलने की आज्ञा माँगी।

iii. भरत के व्यक्तित्व में शारीरिक बल, शील और गुणों का समन्वय है। इसके अतिरिक्त राम के प्रति उनकी प्रेम और भक्ति अपार है, ऐसा काव्यांश से स्पष्ट होता है।

8. i. उपर्युक्त पदयांश के आधार पर कवि ने दृश्य बिम्ब का प्रयोग किया है जैसे -
   - खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा
   - शरद ऋतु के प्रारंभ का बच्चे के रूप में चित्रण करते हुये उसका अपनी नई साइकिल तेजी से चलाते और घंटी बजाते हुए आना।

   ii.
   - वर्षा ऋतु के पश्चात् शरद ऋतु के खुशनुमा आगमन पर प्रकृति में परिवर्तन होते हैं जैसे मौसम साफ होने के कारण बच्चों के खेलकूद कर अपनी प्रसन्नता की अभिव्यक्ति करते हैं।
   - चारों ओर मनभावनी चमकीली कोमल धूप बिखरी रहती है।

OR

i. प्रस्तुत काव्यांश में खेती के कार्यों के रूपकों के जरिए कवि ने अपने रचना-कर्म को व्याख्यायित किया है। जिस प्रकार खेत में बीज बोया जाता है, वैसे ही कवि मनोभावों और विचारों के बीज बोता है। इस बीजारोपण से शब्द रूपी अंकुर फूटते हैं और साहित्यिक कृति रूपी फसल विकसित होती है। इसके माध्यम से कवि ने साहित्य की जीवंतता और अनंतकाल तक उसके अस्तित्व में बने रहने की बात कही है।

ii. मनोभावों की तुलना 'अंधड़' से की गई है क्योंकि भावना एवं विचार आँधी की तरह मन में आते हैं तभी तीव्र मनोभावों की उत्पत्ति द्वारा काव्य-सृजन होता है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 60-70 शब्दों में दीजिये:

a. इस कविता में कवि ने कथ्य और माध्यम के द्वंद्व को उकेरा है तथा भाषा की सहजता की बात कही है। हर बात के लिए कुछ ख़ास शब्द नियत होते हैं, ठीक वैसे ही जैसे हर पेंच के लिए एक निश्चित खाँचा होता है। इसलिए कवि का कहना है कि भाषा का प्रदर्शन नहीं करना चाहिये। घूमा-फिरा कर आलंकारिक रूप से कही गयी बात साधारण लोगों को एक बार में समझ नहीं होती।

b. सूर्योदय से पूर्व उषा का दृश्य अत्यंत आकर्षक होता है। भोर के समय सूर्य के किरणें जादू के समान -लगती हैं। इस समय आकाश का सौंदर्य क्षण-क्षण में परिवर्तित होता रहता है। यह उषा का जादू है। नीले आकाश का शंख-सा पवित्र होना, काली सिल पर केसर डालकर धोना, काली स्लेट पर लाल खड़िया मल देना, नीले जल में गोरी नायिका का झिलमिलाता प्रतिबिंब आदि दृश्य उषा के जादू के समान लगते हैं। सूर्योदय होने के साथ ही ये दृश्य समाप्त हो जाते हैं।

c. फ़िराक की गज़ल के प्रथम दो शेर प्रकृति वर्णन को ही समर्पित हैं। प्रथम शेर में कलियों के खिलने की प्रक्रिया का भावपूर्ण वर्णन है। कवि इस शेर को नव रसों से आरंभ करता है। हर कोमल गाँठ के खुल जाने में कलियों का खिलना और दूसरा प्रतीकात्मक अर्थ भी है कि सब बंधनों से मुक्त हो जाना, संबंध सुधर जाना। इसके बाद कवि कलियों के

खिलने से रंगों और सुगंध के फ़ैल जाने की बात करता है। पाठक के समक्ष एक बिंब उभरता है सौंदर्य और सुगंध दोनों को महसूस करता है।

10. i. किसान जमीन की निराई, गुड़ाई करके मिट्टी तोड़कर हल चलाकर खेत तैयार करता है और फिर बीज-खाद डालकर , सिंचाई करता है तब जाकर फसल तैयार होती है।
    ii. ऋषि मुनियों ने बताया है पहले स्वयं देना होगा तभी देवता उसे कई गुना करके लौटाएँगे।
    iii. इस कथन का अर्थ है कि प्रजा में इतनी शक्ति होती है कि वह अपने अनुसार राजा को चलने के लिए बाध्य कर सकती है।

OR

i. एक अवधूत के समान शिरीष का वृक्ष लेखक के मन में इस प्रकार की तरंगें जगा देता है, जो हमेशा ही ऊपर की ओर उठती रहती हैं।
ii. शिरीष की विशेषता है कि वह चिलचिलाती धूप में भी सरस बना रहता है। वह बाहरी परिवर्तनों, धूप, वर्षा, आँधी, लू आदि को झेलकर भी स्थिर बना रहता है।
iii. शिरीष एक कालजयी अवधूत के समान है। शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर कोमल और कठोर बना रहता है।

11. निम्नलिखित A, B, C प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिये, प्रश्न D अनिवार्य है : (4+4+2)

a. बाज़ार का जादू चढ़ने पर मनुष्य बाज़ार की आकर्षक वस्तुओं के मोह जाल में फँस जाता है। बाजार के इसी आकर्षण के कारण ग्राहक सजी-धजी चीजों को आवश्यकता न होने पर भी खरीदने के लिए लालायित हो जाता है। इसी मोहजाल में फँसकर वह ऐसी गैरजरूरी वस्तुएँ खरीद लेता है जो कुछ समय बाद घर के किसी कोने की शोभा बढ़ाती है, परन्तु जब यह जादू उतरता है तो उसे एहसास होता है कि जो वस्तुएँ उसने आराम के लिए खरीदी थीं उल्टा वे तो उसके आराम में खलल डाल रही है।

b. सफ़िया अपने घरवालों से मिलने के लिए लाहौर गई थी तब वहाँ से लौटते हुए सौगात के रूप में सिख बीबी के लिए उनकी इच्छानुसार नमक लाने के लिए भाई से सहयोग माँगा किन्तु सफ़िया के भाई ने नमक की पुड़िया ले जाने से निम्न कारणों से मना किया

    i. कस्टम के किसी अधिकारी ने पकड़ लिया तो वे उनके सारे सामान की चिंदी-चिंदी कर देगें और इससे उनकी बदनामी के साथ देश का नाम भी बदनाम होगा।
    ii. पाकिस्तान के कानून के हिसाब से नमक के आयात पर प्रतिबंध था। ऐसा करना गैरकानूनी था।

c. भक्तिन का जीवन प्रारंभ से ही दुःखमय रहा। बचपन में ही माँ गुजर गई। विमाता से हमेशा भेदभावपूर्ण व्यवहार मिला। विवाह के बाद तीन लड़कियों जन्म देने के कारण उसे सास व जेठानियों का दुर्व्यवहार सहना पड़ा। किसी तरह परिवार से अलग होकर समृद्धि पाई, परंतु भाग्य ने उसके पति को छीन लिया। ससुराल वालों ने उसकी संपत्ति छीननी चाही, परंतु वह संघर्ष करती रही। उसने बेटियों का विवाह किया तथा बड़े जमाई को घर जमाई बनाया। शीघ्र

ही उसका देहांत हो गया। इस तरह उसका जीवन शुरू से अंत तक दुःखों से भरा रहा।

d. चार्ली चैप्लिन का व्यक्तित्व सुलझा हुआ था। वह हँसमुख आदमी था। दूसरों को हँसाना बहुत आसान है लेकिन खुद पर हँसना उतना ही मुश्किल। चार्ली ने ऐसा कठिन कार्य भी कर दिखाया। वह फ़िल्मों में गंभीर से गंभीर विषय पर स्वयं पर ही हँसता था। करुणा कब हास्य में बदल जाती, पता ही न चलता।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर 80-100 शब्दों में दीजिये:

a. यशोधर बाबू डेमोक्रेट बाबू थे। वे हरगिज यह दुराग्रह नहीं करना चाहते थे कि बच्चे उनके कहे को पत्थर की लकीर मानें। अतः बच्चों को अपनी इच्छा से काम करने की पूरी आज़ादी थी। यशोधर बाबू तो यह भी मानते थे कि आज बच्चों को उनसे कहीं ज़्यादा ज्ञान है, मगर अनुभव का अपना अलग महत्त्व होता है। अतः वे सिर्फ इतना भर चाहते थे कि बच्चे जो कुछ भी करें, उनसे पूछ जरूर लें। इस तरह हम यह कह सकते हैं कि वे स्वयं चाहे जितने पुराणपंथी थे, बच्चों को स्वतंत्र जीवन जीने देते थे।

b. यशोधर बाबू की पत्नी अपने मूल संस्कारों से किसी भी तरह आधुनिक नहीं है, परंतु बच्चों की तरफदारी करने की मातृसुलभ मजबूरी ने उन्हें भी मॉडर्न बना डाला है। जिस समय उनकी शादी हुई थी यशोधर बाबू के साथ गाँव से आए ताऊजी और उनके दो विवाहित बेटे भी रहा करते थे। इस संयुक्त परिवार में पीछे ही पीछे बहुओं में गज़ब के तनाव थे लेकिन ताऊजी के डर से कोई कुछ कह नहीं पाता था। यशोधर बाबू की पत्नी को शिकायत है कि संयुक्त परिवार वाले उस दौर में पति ने उनका पक्ष कभी नहीं लिया, बस जिठानियों की चलने दी। उनका यह भी मानना है कि उन्हें आचार-व्यवहार के ऐसे बंधनों में रखा गया मानो वे जवान औरत नहीं, बुढ़िया थी। जितने भी नियम यशोधर की बुढ़िया ताई के लिए थे, वे सब उन पर भी लागू करवाए गए। बच्चे उससे सहानुभूति व्यक्त करते हैं। फिर वह यशोधर जी से उन्मुख होकर कहती है- मैं भी इन बातों को उसी हद तक मानूंगी जिस हद तक सुभीता हो। अब मेरे कहने से वह सब ढोंग-ढकोसला हो नहीं सकता।

c. लेखक पढ़ना चाहता था और उसके पिता उसे पढ़ाने के बजाए उससे खेत का काम, पशु चराने का काम कराना चाहते थे। पिता ने अपनी इच्छा को ध्यान में रखकर ही लेखक की पढ़ाई छुड़वा दी थी। इसी बात से लेखक बहुत ही परेशान रहता था। उसका मन दिन-रात अपनी पढ़ाई जारी रखने की योजनाएँ बनाता रहता था। जब लेखक ने अपनी माँ से पढ़ाई के संबंध में बात किया तो माँ ने लेखक का साथ देने की बात को तुरंत स्वीकार कर लिया। योजना के अनुसार लेखक ने अपनी माँ से दत्ता जी राव सरकार के घर चलकर उनकी मदद से अपने पिता को राजी करने की बात कही। अपने बेटे की पढ़ाई के बारे में वह दत्ता जी राव से जाकर बात भी करती है और पति से इस बात को छिपाने का आग्रह भी करती है। इससे स्पष्ट होता है कि वह लेखक के मन की पीड़ा को समझती थी।

d. **सिन्धु सभ्यता का इतिहास पाँच हजार वर्ष का है।** यह सच है कि टूटे-फूटे खंडहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती जिंदगियों के अनछुए समयों के दस्तावेज़ होते हैं। ये खंडहर उस समय की संस्कृति का परिचय कराते हैं, जब हमारे पूर्वज उसके साक्षी रहे होंगे, उसका निर्माण और विस्तार किया होगा। आज भी हम किसी भी मकान की देहरी पर पीठ टिकाकर सुस्ता सकते हैं। रसोई की खिड़की पर खड़े होकर उसकी गंध को या बैलगाड़ी

की रुनझुन को महसूस कर सकते हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे पूर्वजों का बौद्धिक ,सामाजिक स्तर इतना विकसित था कि वे आज भी अनुकरणीय है, इस प्रकार नगर-नियोजन, धातु एवं पत्थर की मूर्तियाँ, मृद-भांड, उन पर चित्रित मानव और अन्य आकृतियाँ, मुहरें, उन पर बारीकी से की गई चित्रकारी इतिहास के दस्तावेज होने के साथ-साथ उस अनछुए समय को भी हमारे सामने उपस्थित कर देते हैं।

e. यह रचना यात्रा-वृतांत और रिपोर्ट का मिला-जुला रूप है। यह विश्व फलक पर घटित सभ्यता की सबसे प्राचीन घटना को उतने ही सुनियोजित ढंग से पुनर्जीवित करता है, जितने सुनियोजित ढंग से उसके दो महान नगर मुअनजो-दड़ो और हड़प्पा बसे थे। लेखक ने टीलों, स्नानागारों, मृदभांडों, कुओं-तालाबों, मकानों व मार्गों से प्राप्त पुरातत्वों में मानव-संस्कृति की इस घटना को खोज-खोज कर हमें दिखलाया है जिससे हम इतिहास की सपाट वर्णनात्मकता से ग्रस्त होने की जगह इतिहास बोध से तर होते हैं। सिंधु-सभ्यता के सबसे बड़े शहर मुअनजो-दड़ों की नगर-योजना अभिभूत करती है। वह आज के सेक्टर-मार्का कॉलोनियों के नीरस नियोजन की अपेक्षा ज़्यादा रचनात्मक थी क्योंकि उसकी बसावट शहर के खुद विकसने का अवकाश भी छोड़कर चलती थी। पुरातत्व के निष्प्राण पड़े चिहनों से एक ज़माने में, आबाद घरों, लोगों और उनकी सामाजिक-धार्मिक-राजनीतिक व आर्थिक गतिविधियों का पुख्ता अनुमान किया जा सकता है। वह सभ्यता ताकत के बल पर शासित होने की जगह आपसी समझ से अनुशासित थी। उसमें भव्यता थी, पर आडंबर नहीं था। उसकी खूबी उसका सौंदर्यबोध था जो राजपोषित या धर्मपोषित न होकर समाजपोषित था। यह सभ्यता कला-सिद्ध सभ्यता थी।अतीत की ऐसी कहानियों के स्मारक चिहनों को आधुनिक व्यवस्था के विकास-अभियानों की भेंट चढ़ाते जाना भी लेखक को कचोटता है।